

बरसात के मौसम में फुलवारी का रख-रखाव

¹पंकज हरसोरा, ²रवीना, ³विकास कुमार शर्मा, ⁴राज कुमार एवं ²आदेश कुमार

¹गालगोटिआ विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा (उत्तर प्रदेश)

²चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार (हरियाणा)

Corresponding author's email id: sainiraveena28@gmail.com

बारिश की फुहारें बगीचे के शौकीनों के लिए एक वरदान हैं, जो हमारे पौधों में जीवन फूंकने के साथ ही हमारे परिवेश को जीवंत मरुद्यान में बदल देती हैं। हालाँकि, बरसात का मौसम बगीचे को स्वस्थ एवं समृद्ध में बनाए रखने के लिए चुनौतियाँ भी पेश करता है। क्योंकि इस नम एवं गर्म मौसम में पौधों के पास पानी भरने के

कारण फफूंद जनित बीमारियों एवं कीड़ों का प्रकोप बढ़ जाता है। इसलिए थोड़ी अतिरिक्त देखभाल और ध्यान के साथ, आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपका बगीचा नम महीनों के दौरान भी सुंदर और उत्पादक बना रहे। अतः बरसात के मौसम में निम्न क्रियाओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

1. जल निकासी में सुधार

भारी वर्षा के दौरान उचित जल निकासी की व्यवस्था करना एक महत्वपूर्ण कार्य है। अतः जलभराव और जड़ सड़न से बचने के लिए, सुनिश्चित करें कि आपके बगीचे में पर्याप्त जल निकासी व्यवस्था हो। अत्यधिक जल संचय को रोकने के लिए बंद

नालियों, गहरी सतहों और नालियों को साफ करें। इसके अतिरिक्त, बेहतर जल निकासी को बढ़ावा देने के लिए रोपण क्षेत्रों को ऊंचा करने या मेड को शामिल करने पर विचार करें।



2. काट-छांट

पौधों को बीमारियों से बचाव और विकास को प्रोत्साहित करने के लिए बरसात के मौसम में नियमित कटाई-छंटाई आवश्यक है। पौधों को आड़ी तिरछी, घनी लटकती हुई शाखाओं और अतिरिक्त पत्तियों को काट दें ताकि वायु परिसंचरण और सूर्य का

प्रकाश प्रचुर मात्रा में पौधों को प्राप्त हो सके। काट-छांट के पश्चात फफूंद नाशी का छिड़काव करें, जिससे फंगल संक्रमण का खतरा कम हो जाता है।

3. खरपतवार नियंत्रण

बरसात के मौसम में खरपतवार पनपते हैं, जो पोषक तत्वों और पानी के लिए मुख्य: पौधों से प्रतिस्पर्धा करते हैं। इन्हें दूर रखने के लिए बार-बार निराई-गुड़ाई करना महत्वपूर्ण है। अतः नियमित रूप से खरपतवार निकालें तथा उन्हें दोबारा उगने से

रोकने के लिए उनकी जड़ें उखाड़ दें। पौधों के चारों ओर पलवार लगाएं, जिससे खरपतवार की वृद्धि को रोकने और नमी को संरक्षित करने में मदद मिलती है।



4. मृदा उर्वरता बनाये रखे

वर्षा जल द्वारा भूमि में उपलब्ध पोषक तत्व जड़ क्षेत्र से निचे चले जाते हैं अथवा वो बहकर खेत से दूर जा सकते हैं। अतः वर्षा ऋतु समाप्त होने के पश्चात्, मिट्टी को स्वस्थ बनाए रखने के लिए, कम्पोस्ट या अच्छी तरह सड़ी हुई खाद जैसे कार्बनिक पदार्थ डालकर खोए हुए पोषक तत्वों की भरपाई करें। यह

आपके पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने और जल धारण क्षमता में सुधार करने में मदद करेगा। नियमित रूप से मिट्टी के पीएच स्तर का परीक्षण करें और पौधों के इष्टतम विकास के लिए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन तदनुसार समायोजित करें।

5. नाजुक पौधों की रक्षा करें

यदि आपके बगीचे में नाजुक या गमले में पौधे हैं, तो भारी बारिश या तेज हवाओं से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए उन्हें आश्रय वाले क्षेत्रों में ले जाये। वैकल्पिक रूप से, उन्हें

अत्यधिक वर्षा से बचाने और पर्याप्त सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्लास्टिक शीट या रेन कवर अस्थायी ढांचों का उपयोग करें।

6. वर्षा जल और पूरक जल

जबकि बरसात का मौसम प्राकृतिक पानी प्रदान करता है, अतः आपके बगीचे में नमी के स्तर की निगरानी करना आवश्यक है। अत्यधिक वर्षा कभी-कभी अतिसंतृप्ति का कारण बन सकती है, जो पौधों को नुकसान पहुंचा सकती है। अतः प्राकृतिक वर्षा

जल और पूरक जल के बीच संतुलन बनाने का लक्ष्य रखें तथा फुलवारी में नमी की कमी होने पर कृत्रिम सिंचाई का प्रबंधन करें।

7. रोग, कीट और उनका प्रबंधन

बरसात के मौसम में, बढ़ी हुई नमी बीमारियों और कीटों के प्रसार के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करती हैं। बागवानों का लिए सतर्क रहना और अपने पौधों की सुरक्षा के लिए सक्रिय उपाय करना आवश्यक है। रोग व कीटों के संक्रमण के लक्षणों के लिए नियमित रूप से अपने बगीचे का निरीक्षण करें और उन्हें नियंत्रित करने के लिए उचित उपाय करें। पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना क्षति को कम करने के लिए लाभकारी कीड़ों को

शामिल करना या जैविक कवकनाशी एवं कीटनाशकों का उपयोग करने जैसे प्राकृतिक कीट रोग नियंत्रण तरीकों को अपनाएं। अपने बगीचे की सुरक्षा के लिए, हवा के प्रवाह को बढ़ाने के लिए पौधों के बीच उचित दूरी जैसे निवारक उपाय अपनाएं। बरसात के मौसम में होने वाली कुछ सामान्य बीमारियों और कीट तथा उन्हें नियंत्रित करने के उपाय इस प्रकार हैं।

1. फंगल रोग (कवक जाती रोग)

कवक नम वातावरण में पनपते हैं, और बरसात का मौसम विभिन्न कवक रोगों के लिए आदर्श प्रजनन स्थल प्रदान करता है। कुछ फुलवारी को नुकसान पहुंचाने वाले मुख्य रोगों में शामिल हैं:

1. **सफेद फफूंदी:** यह रोग पौधों की पत्तियों, तनों और फूलों पर सफेद पाउडर जैसे पदार्थ के रूप में दिखाई देता है। इसे नियंत्रित करने के लिए, पौधों के चारों ओर अच्छा वायु संचार सुनिश्चित करें, ऊपर से पानी देने से बचें और यदि आवश्यक हो तो फफूंदनाशकों जैसे घुलनशील सल्फर (सल्फेक्स) 500 ग्राम या बाविस्टिन 200 ग्राम प्रति एकड़ की दर से लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
2. **रतुआ रोग:** पत्ती धब्बा रोग के कारण पत्तियों पर गहरे या हल्के रंग के धब्बे पड़ जाते हैं, जिससे पत्तियां समय से पहले गिर जाती हैं। प्रभावित पत्तियों को हटा दें, ऊपर से पानी देने से बचें और निवारक उपाय के रूप में

फफूंदनाशकों इंडोफिल एम-45 नामक दवा को 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर 10 दिन के अंतर पर 2-3 बार छिड़काव करें का प्रयोग करें।

3. **जड़ गलन या विल्ट:** अत्यधिक बारिश से मिट्टी में पानी भर जाता है, जिससे कई पौधों की जड़ें सड़ जाती हैं पौधे मुरझा जाते हैं इसे रोकने के लिए, बगीचे में उचित जल निकासी सुनिश्चित करें और अत्यधिक पानी भरने से रोकें।

2. जीवाणु जनित रोग

बरसात के मौसम में विशेषकर घावों या पौधों के कमजोर क्षेत्रों में जीवाणु संक्रमण भी हो सकता है, जैसे:

- **बैक्टीरियल ब्लाइट:** यह रोग पत्तियों और तनों पर मुरझाने, परिगलन और धब्बे का कारण बनता है। इसे नियंत्रित करने के लिए, संक्रमित हिस्सों को हटा दें, अच्छी स्वच्छता अपनाएं और अधिक पानी देने से बचें

तथा कॉपर ऑक्सी क्लोराइड नामक दवा को २ ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर बनाकर छिड़काव करें।

3. उद्यान के कीट:

- **स्लग और घोंघे:** ये कीट नम स्थितियों में पनपते हैं और युवा पौधों और कोमल पत्तियों को खा सकते हैं। प्लांटर्स के चारों ओर तांबे के टेप जैसे भौतिक अवरोधों का उपयोग करें, कीटों को हाथ से चुनें, या जैविक स्लग रिपेलेट्स लगाएं।
- **एफिड्स:** ये छोटे कीड़े बरसात के मौसम में तेजी से बढ़ते हैं और पौधों से रस चूसकर नुकसान पहुंचा सकते हैं। एफिड आबादी को नियंत्रित करने के लिए लेडीबग्स, लेसविंग्स और परजीवी ततैया जैसे प्राकृतिक शिकारियों को प्रोत्साहित करें।

निवारक उपाय

1. **प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें:** अपने बगीचे की योजना बनाते समय, पौधों की ऐसी किस्मों का चयन करें जो आपके क्षेत्र में आम बीमारियों के लिए प्रतिरोधी हों।
2. **पौधों के बीच उचित दूरी:** पौधों के बीच पर्याप्त दूरी होने से वायु परिसंचरण में सुधार होता है, जिससे फंगल रोगों का खतरा कम हो जाता है।
3. **मल्लिचंग:** मिट्टी को भारी बारिश से बचाने, मिट्टी से पैदा होने वाले रोगजनकों को फैलने से रोकने और खरपतवारों को नियंत्रित रखने के लिए जैविक पलवार का उपयोग करें।
4. **पानी देना:** फंगल प्रसार को कम करने के लिए पौधों को आधार पर पानी दें और ऊपर से पानी देने से बचें।

सारांश

बरसात का मौसम जहाँ बगीचे को नई ऊर्जा प्रदान करता है, वहीं अनेक चुनौतियाँ भी लेकर आता है। जल निकासी, कटाई-छंटाई, खरपतवार नियंत्रण, मृदा उर्वरता बनाए रखना तथा रोग-कीट प्रबंधन जैसे उपायों पर विशेष ध्यान देकर इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान संभव है। प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करते हुए जैविक और सतत बागवानी की दिशा में कदम बढ़ाया जा सकता है। यदि समय पर उचित देखभाल की जाए, तो वर्षा ऋतु आपके बगीचे के लिए केवल हरियाली नहीं बल्कि समृद्धि और सौंदर्य का उपहार भी बन सकती है।

- **कैटरपिलर:** बरसात के मौसम में कैटरपिलर की विभिन्न प्रजातियाँ पौधों को नुकसान कर सकती हैं, जो पत्तियों को चबाती हैं और काफी नुकसान पहुंचाती हैं। कैटरपिलर को हाथ से चुनें या उन्हें लक्षित करने के लिए बैसिलस थुरिजिएन्सिस (बीटी) जैसे जैविक कीटनाशकों का उपयोग करें।
- **मच्छर:** बारिश का जमा हुआ पानी बगीचे में मच्छरों के पनपने का कारण बन सकता है। पानी रखने वाले किसी भी कंटेनर को नियमित रूप से खाली करें और मच्छरों के लार्वा को नियंत्रित करने के लिए लार्विसाइड्स का उपयोग करें। फुलवारी में सभी प्रकार के रोग एवं कीड़े को रोकथाम के लिए समन्वित रोग एवं किट प्रबंधन पराडंली का निम्न प्रकार से प्रयोग करें।

5. **स्वच्छता:** बीमारी और कीटों के निवास को कम करने के लिए बगीचे से मृत पौधों की सामग्री और मलबे को नियमित रूप से हटा दें।
6. **लाभकारी कीड़े:** प्राकृतिक रूप से कीटों की आबादी को नियंत्रित करने में मदद करने के लिए लेडीबग्स, लेसविंग्स और प्रेयारिंग मेंटिस जैसे लाभकारी कीड़ों को आकर्षित करें।
7. **रासायनिक नियंत्रण:** अंतिम उपाय के रूप में, लेबल निर्देशों का पालन करते हुए रासायनिक कीटनाशकों या कवकनाशी का उपयोग करें, और पर्यावरण के अनुकूल उपयोग करें। आवश्यक सावधानियां बरतकर, बागवान बरसात के मौसम में बीमारियों और कीटों के प्रभाव को कम कर सकते हैं।